❀ ॐ नमः श्री जगदम्बायै ❀

ॐ विश्वेश्वरी निखिल देव महर्षि पूज्या,
सिंहासना त्रिनयना भुजगोपवीता।
शङ्खाम्बुजास्यऽमृत कुम्भक पञ्च शाखा,
राज्ञी सदा भगवती भवतु प्रसन्ना ॥१॥

✻ भाष ✻

जगत ईश्वरी छि यसदीव ऋषे सारी पूज़ान ,
सूह आसनस सरूप नाल्य ज्यनयत्रछय दारान् ।
अथि छुस खड्ग अमृत नूट शङ्ख पदम आसान् ,
राज्ञा दृहय भगवती रूज़िन प्रसन्न पाठय ॥१॥

जन्माटवीप्रदहने दववह्नि भूता,
तत्पाद पङ्कजरजोगत चेतसां या।
श्रेयोवतां सुकृतिनां भवपाश भेत्त्री,
राज्ञी सदा भगवती भवतु प्रसन्ना ॥२॥

* भाष *

इमज़न चरण छि अमि सून्दि मनि मन्ज़ दारान्,
ज़न्म वन वनिथ अग्नी छख लादि ज़ालान्।
भक्तयन इमन युसू वन्दन संसार चटान्।
राज्ञा द्रहय भगवती रूज़िन प्रसन्न पाठय ॥२॥

देव्या ययाऽनुज राक्षसदुष्टचेतो,

न्यग्भावितं चरणनूपुरशिञ्जितेन ।

इन्द्रादिदेवहृदयं प्रविकासयन्ती,

राज्ञी सदा भगवती भवतु प्रसन्ना ॥३॥

* भाष *

यसि दीविये असुर दानव दुष्ट महान,

रूब्नि पादनूय तल रटिथ श्वब्नि युस सपनान् ।

इन्द्राज़ व्ययि ति दीवन हृदयस सु फ्वलवान्,

राज्ञा द्वहय भगवती रूज़िन प्रसन्न पाठय ॥३॥

दुःखार्णवे हि पतितं शरणागतं या,

चोद्धृत्य सा नयति धाम परं दयाब्धि ।

विष्णुर्गजेन्द्रमिव भीत भयापहर्त्री,

राज्ञी सदा भगवती भवतु प्रसन्ना ॥४॥

* भाष *

शरनागतन तू प्यमूत्यन यूस दुःख छु आसान्,

सुय दुःखकरानछय मनि दूर म्वुकी छि दिवान ।

भय मन्ज़् रछान युथ रछान ह्वस्त व्यथ्यगि भगवान,

राज्ञी छ्हय भगवती रूज़िन प्रसन्न पाठय ॥४॥

यस्या विचित्रमखिलं हि जगत्प्रपञ्चं ,
कुक्षौ विलीनमपि सृष्टिविसृष्टिरूपात् ।
आविर्भवत्यविरतं चिदचित्स्वभावं ,
राज्ञी सदा भगवती भवतु प्रसन्ना ॥५॥

* भाष *

युसू सोर ज़गत रंगू रंगू स्थावर ज़न्गम रूप,
तस मन्ज़ बनिथ सू आसान उत्पत प्रलय रूप ।
व्यथि सुय तिथूय छु नेरान युद ओस प्रलय रूप,
राज्ञा द्रहय भगवती रूज़िन प्रसन्न पाठय ॥५॥

यत्पादपङ्कजरज:कणज प्रसादा,

योगीश्वरैर्विगतकल्मषमानसैस्तत् ।

प्राप्तं पदं जनिविनाशहरं परं सा,

राज्ञी सदा भगवती भवतु प्रसन्ना ॥६॥

* भाष *

यमि सून्ज़ि पादगर्दि सूत्य योगी श्वरव मन ,

मल तथ छुलुख अदू च्हयुनुख ज्योन मरन बन्धन ।

प्रसाद ब्न्योख परम धाम प्रोवुख छि रोज़ान् ,

राज्ञा ठ्हय भगवती रूज़िन प्रसन्न पाञ्य ।

यत्पादपङ्कजरजांसि मनोमलानि,

संमार्जयन्ति शिवविष्णुविरिञ्चि देवैः ।

मृग्यान्यऽपश्चिमतनोः प्रणुतानि माता,

राज्ञी सदा भगवती भवतु प्रसन्ना ॥७॥

* भाष *

यसि सून्ज़ि पाद गर्दि सूत्य मन मल छु हारान् ,

ब्रह्मा विष्ण तू शिव छी तिम पाद च्छारान् ।

पाश्चात जन्म पुरष छी माता च्य नमान् ,

राज्ञा ह्रद्य भगवती रूज़िन प्रसन्न पाठ्य ॥७॥

यद्दर्शनामृतनदी महदोघयुक्ता,
संप्लावयत्यखिलभेदगुहास्वऽनन्ता ।
तृष्णाहरा सुकृतिनां भवतापहर्त्री,
राज्ञी सदा भगवती भवतु प्रसन्ना ।।८।।

* भाष *

अमृत वानि वरिथूय दर्शन नदी स्वय:
स्वय छय अनन्त बिन-भाव ग्वफूनूय छय यूय सुय ।
सन्ताप त्रेव चट्वूनि सत पुरुषनय स्वय,
राज्ञा ह्वदय भगवती रूाज़न प्रसन्न पाठ्य ।।८।।

यत्पादचिन्तन दिवाकररश्मिमाला,

चान्तर्बहिष्करणवर्गसरोजषण्डम् ।

ज्ञानोदये सति विकास्य तमोपहर्त्री,

राज्ञी सदा भगवती भवतु प्रसन्ना ॥६॥

* भाष *

जूचू सूर्य सून्जू हिषमाल सुमरन छि यस पाद,

अन्ताहकर्ण-बह्यषकर्ण पम्पोष डल पाद ।

वुज़वान छय ज्ञान फ़ूलवान गटकार च़टान पाद,

राज्ञा द्रुहय भगवती रूज़िन प्रसन्न पाठ्य ॥६॥

हंसस्थिता सकल शब्दमयी भवानी,

वाग्वादिनी हृदय पुष्कर चारिणीया ।

हंसीव हंस रजनीश्वर वह्निनेत्रा,

राज्ञी सदा भगवती भवतु प्रसन्ना ॥७॥

* भाष *

हंसस खसिथ सकल शब्दमयी भवानी,

हृदयि कमलसूय मन्ज़ वसान स्वय वाकवानी ।

सूर्यं चन्द्र अग्नि न्यत्रव स्वय हंसानी,

राज्ञा द्रहय भगवती रूज़िन प्रसन्न पाठ्य ॥७॥

यासोम सूर्य वपुषा सततं सरन्ती,

मूलाश्रयात्तडिदिवाऽऽविधिरन्ध्रमीढ्या ।

मध्यास्थता सकल नाडिसमूह पूर्णा,

राज्ञी सदा भगवती भवतु प्रसन्ना ॥८॥

* भाष *

सूर्यचन्द्र रूप हिषज़न व्वथितूय छय फेरान् ,

मूलाधार प्यठ् व्रह ब्रह्मरन्द्रस तान्।

मन्ज़भाग विहि छय सारिनूय नाडियन स्व पूरान् ,

राज्ञा द्रहय भगवती रूज़िन प्रसन्न पाठ्य ॥८॥

चैतन्य पूरित समस्त जगद्विचित्रा,
मातृ प्रमेयपरिमाणतया चकास्ति ।
या पूर्णवृत्त्यहमिति स्वपदाधिरूढा,
राज्ञी सदा भगवती भवतु प्रसन्ना ॥६॥

* भाष *

चैतन्य ज़गत युसु छु ज़न रंगू रंगू बनानी,
ज़ान ज़ानवुन तू ज़ाननी च्ययि किन्य ब्रज़ानी ।
यस पूर्ण भाव अहं पद पननुय थवानी,
राज्ञी छ़ह्य भगवती रूज़िन प्रसन्न पाठ्य ॥६॥

या चित्क्रमक्रमतया प्रविभाति नित्या,

स्वातन्त्र्य शक्तिरमला गतभेद भावा।

स्वात्मस्वरूपसुविमर्शपरैः सुगम्या,

राज्ञी सदा भगवती भवतु प्रसन्ना ॥१०॥

* भाष *

कर्म-अकर्म च्यत शक्त युस् द्रह छय बासान् ,

त्रिन भाव किन्य स्व निर्मल सुतन्त्रभाव सान।

इम आत्म च्यनतन करान तिम छी लबान थान् ,

राज्ञा द्रहय भगवती रूज़िन प्रसन्न पाठ्य ॥१०॥

याकृत्य पञ्चकनिभालनलालसैस्तैः,

सन्दृश्यते निखिल वेद्यगतापि शश्वत् ।

सान्तर्धृता परप्रमातृपदं विशन्ती,

राज्ञी सदा भगवती भवतु प्रसन्ना ॥११॥

* भाष *

इम छी लगिथ व्यमर्शस मन्ज़ पञ्चकृतूकिस्,

प्रथ कुनि मनज़ वुज्ञान छिस प्रथ कुनि वुज्ञान छिस् ।

हुष्यार छय पद रटिथ स्वय शक्ति छय गुण छिस,

राज्ञा द्रहय भगवती रूज़िन प्रसन्न पाठ्य ॥११॥

याऽनुत्तरात्मनि पदे परमाऽमृताब्धौ,
स्वातन्त्र्यशक्ति लहरिवबहिः सरन्ती ।
संलीयते स्वरसतः स्वपदे सभावा,
राज्ञी सदा भगवती भवतु प्रसन्ना ॥१२॥

* भाष *

पानि पान थानू पन्नने ग्वसू ग्वथि तिच्छूय ज़न् ,
यिथू ग्वुथि तरन्ग अमृत सूत्य भरिथूय समन्द्रन ।
ग्ययि सूत्य निवान छि सोरुय फीरिथ त्वतुय ज़न,
राज्ञा द्वहय भगवती रूज़िन प्रसन्न पाठ्य ॥१२॥

मेरोः सदैवहिदरोषु विचित्रवाग्भि,

गायान्ति या भगवतीं परिवादिनीभिः ।

विद्याधराहि पुलकाङ्कित विग्रहाः सा,

राज्ञी सदा भगवती भवतु प्रसन्ना ॥१३॥

* भाष *

न्यती समीरच्यन ग्वफन नाना प्रकार गीत,

ग्यवान छि च्ये भगवती सेतार स्वर सूत्य ।

रूमू हर्ष सान व्यध्याधर गायन करान कूत्य,

राज्ञा द्रहय भगवती रूज़िन प्रसन्न पाठ्य ॥१३॥

राज्ञी सदा भगवती मनसा स्मरामि ॥
राज्ञी सदा भगवती वचसा गृणामि ॥
राज्ञी सदा भगवती शिरसा नमामि ॥
राज्ञी सदा भगवती शरणं प्रपद्ये ॥१७॥

* भाष *

राज्ञा द्रह्य भगवती मन् किन्य स्वरान छुस ॥
राज्ञा द्रह्य भगवती ज्यवि किन्य परान छुस ॥
राज्ञा द्रह्य भगवति कल किन्य नमान छुस ॥
राज्ञा द्रह्य भगवती आमुत शरण छुस ॥

राज्ञ्याः स्तोत्रमिदं पुण्यं यः पठेद्भक्तिमान्नरः
नित्यं देव्याः प्रसादेन शिवसायुज्यमाप्नुयात् ॥

इति श्री जगदम्बास्तुति-राजानक-विद्याधर विरचिता शुभदा बोभूयात् ॥ ॥ इति शिवम् ॥

कृतज्ञता

ज्ञात होवे कि श्री स्वामी विद्याधर जी महाराज विरचिता श्री राज्ञास्तुति की काश्मीरी भाषा में जो टीका श्री महादेवजी ने की है उसके अतियुक्त सेवक ने अपनी बुद्धि अनुसार काशमीरी भाषा में अनुवाद किया है। उसको देवनागरी भाषा में प्रकाशत किया।

इस कार्य में श्रीमान नील कण्ठ जी सेवक श्री स्वामी विद्याधर जी का मैं हार्दिक धन्यवाद देता हूँ। स्वामी जी के सेवकूं और राज्ञा-भगवती प्रेमियों से आशा है कि अगर मेरी कोई त्रुटी रह गई हो तो क्षमा करें। (सपरू) १२-२-६५

शक्ति प्रिंटिंग प्रैस जम्मू में छपकर प्रकाशित की।